विधेः सायन्तनस्यान्ते स ददर्श तपोनिधिम् ।

अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहयेव हविर्भुजम् ।।56।।

अन्वय सः सायन्तनस्य विधेः अन्ते स्वाहया अन्वासितम् हविर्भुजम् इव अरुन्धत्या अन्वासितम् तपोनिधिं ददर्श।

अनुवाद राजा दिलीप ने सायंकालिक सन्ध्यावन्दनादि विधि के अनन्तर अपनी पत्नी अरुन्धती से सेवित तपस्वी ऋषि वशिष्ठ को इस प्रकार बैठे देखा जैसे अपनी पत्नी स्वाहा देवी से सेवित साक्षात् अग्निदेव हों।

टिप्पणियाँ

सायंतनस्य विधेः सायंकाल के समय की जाने वाली विधि (जप-होम-अनुष्ठान के पूर्ण करने के बाद) प्रत्येक तपस्वी के लिए सन्ध्या समय जप अग्निहोत्र आदि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक है। जब राजा-रानी आश्रम में पहुँचे तो वशिष्ठ ऋषि भी संध्याकालीन धार्मिक अनुष्ठान में व्यस्त थे। अतः सन्ध्याकालीन विधि के अनन्तर वशिष्ठ ने राजा से भेंट की। पूजाविधि में व्यस्त तपस्वी के निकट जाने से तत्तत् क्रिया में विघ्न के भय से धर्मशास्त्रों में ऐसी अवस्था में उनके निकट जाने का निषेध है। देखिए **''फलपुष्प . कुशाग्न्यम्बुमृदन्नक्षतपाणिकः। जपं होमं च कुर्वाणो नाभिवाद्यो द्विजो भवेत्।''** सायंतनत्र्स्यमृतन। सायं, चिरं, प्राह्णे तथा प्रगे अव्ययों के पश्चात् ट्यु तथा ट्युल् लगाया जाता है तथा शब्द और प्रत्यय के बीच त् आगम होता है। विधेः-जप-होम आदि अनुष्ठान के।

ददर्श धातु दृश् लिट्। देखा। राजा ने वशिष्ठ को देखा जिसके पीछे उसकी पत्नी अरुन्धती बैठी थी। 'अरुन्धती के द्वारा सेवित'.यह कर्मवाच्य में प्रयोग है।

हविर्भुजम् हवींषि भुनक्ति इति हविर्भुक् (हविस् धातु भुज् क्विप्)। वह जो घी दूध आदि हविष्य (आहुति) को खाती है, अर्थात् अग्नि को। देखिए.''वहति विधिहुतं या हविः।'' (अभिज्ञानशाकुन्तलम्)

स्वाहा प्रायः स्वाहा का अर्थ है वह ध्वनि जिसका अग्नि में देवताओं के लिए आहुति डालते समय मन्त्र के अन्त में उच्चारण किया जाता है। अर्थात् अग्नि में आहुति डालते समय किया गया शब्दोच्चारण। किन्तु प्रस्तुत सन्दर्भ में स्वाहा का अर्थ अग्नि की पत्नी के रूप में ग्रहण किया गया है।

अन्वासितम् यद्यपि आस् धातु अकर्मक है किन्तु अनु उपसर्ग सहित यह सकर्मक हो जाती है।